

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 5, 2 कुरिन्थियों 4, मिट्टी के बर्तनों में खजाना

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5, 2 कुरिन्थियों 4, मिट्टी के बर्तनों में खजाना है।

दबावों और प्रतिकूलताओं के बीच एक मसीही पथिक को क्या आगे बढ़ने में मदद करता है? आप देखिए, प्रभु के लोगों, परमेश्वर के लोगों और सेवकों के लिए शैतान से विरोध का अनुभव करना असामान्य नहीं है।

आते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या ये प्रतिकूलताएँ हमें छोड़ने के लिए पर्याप्त कारण देती हैं? आज संप्रदायों और लोगों के बीच इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि कितने लोग पादरी सेवा छोड़ रहे हैं। हम इसे बर्नआउट या जो भी कहते हैं। फिर आप खुद से पूछते हैं कि जमीनी स्तर पर नेतृत्व के इस हास का असल कारण क्या है।

हम 2 कुरिन्थियों के अध्याय 4 को देख रहे हैं, इसलिए मैं उस अध्याय में ये प्रश्न पूछता हूँ क्योंकि आप खुद से पूछना चाहते हैं कि पॉल को क्या प्रेरित करता है। पॉल के जीवन में क्या अंतर है? क्या उसे इतना मजबूत बनाता है? क्या उसे बनाता है, क्या उसे सभी विरोधों और कठिनाइयों के बावजूद बनाए रखता है जिसका वह सामना करता है? इस अंश में पॉल ने जो वर्णन किया है उसका एक हिस्सा वह है जिसे हम पोषण के साधन के रूप में देखते हैं। वह फिर से शुरू करता है; वह अध्याय 3, पद 6 के विषय को फिर से शुरू करता है। हम अध्याय 4, पद 1 पर आ रहे हैं, लेकिन पॉल अध्याय 3, पद 6 में अपने तर्क को फिर से शुरू करने जा रहा है, जो कि वाचा का सेवक होने के लिए ईश्वरीय नियुक्ति और प्रावधान है। इसलिए, 2 कुरिन्थियों के अध्याय 4 में, पॉल अपने विरोधियों के विपरीत अपने मंत्रालय को विकसित और बचाव करना जारी रखता है, और वह ऐसा करता है, विशेष रूप से सुसमाचार संदेश का सहारा लेकर।

वह यह कहकर शुरू करता है कि उसके पास यह सेवकाई है, और फिर वह वह योग्यता जोड़ता है जो उसे उसके विरोधियों से अलग करती है, कि उसकी सेवकाई परमेश्वर की दया का परिणाम है। पिछले अध्याय में, हम कहते हैं कि यह अनुग्रह की सेवकाई है, आत्मा की सेवकाई है। अब वह इसे दया की सेवकाई कहता है।

इसलिए, पौलुस ने अपनी सेवकाई में जिन कठिनाइयों का सामना किया, वे उसके लिए पद छोड़ने के लिए पर्याप्त कारण नहीं थे। आप सामान्यतः, हम सामान्यतः कहते हैं कि जीतने वाला कभी हार नहीं मानता और हार मानने वाला कभी जीतता नहीं है, और पौलुस पद छोड़ने वाला नहीं था। अपने द्वारा सामना किए गए कठिन अनुभवों के बावजूद, उसने घोषणा की कि वह हार नहीं मान रहा है और वह पद नहीं छोड़ रहा है, और फिर उसने तर्क देना जारी रखा कि नई वाचा के एक सेवक के रूप में, उसने सभी बेईमानी और छल को त्याग दिया है, और इसके बजाय, वह सत्य की घोषणा करके हर व्यक्ति के विवेक के सामने खुद की प्रशंसा करना जारी रखता है।

वह इस बात से इनकार करता है कि वह सुसमाचार संदेश को गलत साबित करता है, और वह पहले ही बता चुका है कि उसके विरोधी ऐसा करते हैं। यहाँ आप पाएँगे कि पौलुस अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए छवियों, अलंकारों और विरोधाभासों का उपयोग कर रहा है। पौलुस का तर्क है कि उसके दुख और कमज़ोरियाँ, प्रेरितिक बुलावे की कमी के सबूत होने के बजाय, एक ऐसी सेवकाई को प्रकट करती हैं जो परमेश्वर से, पीड़ित प्रभु से प्राप्त होती है, और जिसका अंतिम उद्देश्य परमेश्वर की महिमा है।

तो, दूसरे शब्दों में, वास्तव में, पौलुस अपने दुख को सम्मान के प्रतीक के रूप में या अपने शिष्यत्व, अपने प्रेरितत्व के प्रतीक के रूप में पहनता है। वह कहता है, देखो, मैं इसलिए कम प्रेरित नहीं हूँ क्योंकि मैं दुख उठा रहा हूँ। वास्तव में, ये दुख मेरे प्रेरितिक बुलावे को प्रमाणित और पुष्ट करते हैं।

तो, आइए हम पाठ पर जाएँ और इसे देखना शुरू करें, सबसे पहले, इसे पद 1 से देखें। इसलिए, यह देखते हुए कि हमारे पास यह सेवकाई है, हमें दया मिली है, हम निराश नहीं होते। आप देखिए, परमेश्वर ने उसे एक विशेषाधिकार दिया था। वास्तव में, जब आप उस अंश को देखते हैं, तो यह कहता है कि हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

हम हिम्मत नहीं हारते। यही बात कही गई है, और पौलुस पद 16 में यही बात दोहराने जा रहा है: हम हिम्मत नहीं हारते, हम हिम्मत नहीं हारते। इसलिए, उसके पास हिम्मत हारने का कोई कारण नहीं था, क्योंकि परमेश्वर ने अपनी दया से उसे एक ऐसा विशेषाधिकार दिया था जो मूसा से बढ़कर था।

मूसा के पास एक शानदार सेवकाई थी, लेकिन वह फीकी पड़ गई थी। लेकिन पौलुस कहता है कि मेरे पास एक सेवकाई है जो नई वाचा पर आधारित है। उसे अब व्यवस्था का संचार करने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर की कृपा बाँटने के लिए बुलाया गया था।

सुसमाचार के सेवक को कानून के मध्यस्थ से भी अधिक बुलावा मिलता है। इसलिए, पौलुस नई वाचा के तहत सेवा करने के इस दिव्य आदेश को उन सभी परीक्षणों की भरपाई से कहीं अधिक मानता है जो उसने अपने बुलावे के प्रति सच्चे रहने के लिए सहन किए। आप जानते हैं, वह देखता है कि परीक्षण इसके लायक हैं।

कभी-कभी हमें खुद को यह याद दिलाना चाहिए कि सेवकाई में हम जिन परीक्षाओं और कठिनाइयों का सामना करते हैं, वे इसके लायक हैं। वे सभी पीड़ाओं के लायक हैं। उन्होंने कहा कि हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, और फिर उन्होंने कहा, जब हमें सेवकाई मिलती है, तो हम हिम्मत नहीं हारते।

पौलुस पद 16 में पुनः इस विचार पर लौटेगा कि हिम्मत न हारना। अतः आप पद 2 में पाते हैं कि हमने बेईमानी की छिपी हुई बातों को त्याग दिया है। हम न तो चालाकी से काम करते हैं, न परमेश्वर के वचन को छल से काम में लाते हैं, परन्तु सत्य को प्रकट करके परमेश्वर के साम्हने हर एक मनुष्य के विवेक पर अपनी भलाई की मुहर लगाते हैं।

तो यहाँ, पॉल अपने व्यवहार के बारे में बात करता है। याद रखें, हमने पहले कहा था कि पॉल का पत्र एक टेलीफोन वार्तालाप के एक छोर को सुन रहा है। हम पॉल को सुनते हैं, और हम दूसरे पक्ष को नहीं सुनते हैं।

लेकिन हम पॉल की बातों के ज़रिए दूसरे पक्ष को भी सुनते हैं। इसलिए, जाहिर है, पॉल पर धोखेबाज़ी का आरोप लगाया गया होगा। उसने अध्याय 2, श्लोक 17 में अपना बचाव किया, और उसने कहा, नहीं, हम वचन के सौदागर नहीं हैं, और वह अपने तरीके और अपने संदेश के ऐसे चरित्र चित्रण को जोरदार तरीके से खारिज करता है।

पॉल कहते हैं कि मेरी रणनीति कभी भी गुप्त या भ्रामक नहीं रही है, और मैंने कभी भी धोखे से या बेईमानी से परमेश्वर के संदेश को हेरफेर नहीं किया है जो मुझे सौंपा गया था। पॉल कहते हैं कि मैंने वचन का प्रचार उसी तरह किया है जैसा मुझे दिया गया था। आप देखिए, वह गैर-यहूदियों से मूसा के कानून का पालन करने पर जोर नहीं दे रहा था, जो शायद उन कारणों में से एक है जिसके कारण वह सुसमाचार में मिलावट कर रहा था।

उन्होंने कहा नहीं। आप देखिए, किसी भी आत्म-प्रशंसा में, किसी भी आत्मरक्षा में, आत्म-प्रशंसा एक भूमिका निभाती है, चाहे आप इसे पसंद करें या नहीं। एक बार जब आप खुद का बचाव कर रहे होते हैं, तो एक समय ऐसा आएगा जब आप कहेंगे, ठीक है, मैं ऐसा नहीं हूँ, लेकिन मैं ऐसा हूँ।

और यह कहते हुए कि मैं ऐसा नहीं हूँ, मैं ऐसा हूँ, आप खुद की प्रशंसा कर रहे हैं, लेकिन उनकी प्रशंसा हर बिंदु पर आत्म-पुष्टि द्वारा नहीं है, बल्कि केवल यह कहकर है कि, मैं सत्य की घोषणा कर रहा हूँ। उनकी अपील पक्षपातपूर्ण भावना, बिल्कुल भी नहीं, या पूर्वाग्रहों या मानवीय पूर्वाग्रहों को निर्देशित नहीं थी, बल्कि हर व्यक्ति की अंतरात्मा को संबोधित थी। उनकी आत्म-प्रशंसा ईश्वर को एक दर्शक के रूप में रखकर की गई थी।

इसलिए, वह जानता है कि मैं चाहे कुछ भी कहूँ, परमेश्वर मुझे देख रहा है। इसलिए मेरे खिलाफ़ लगाए गए सभी आरोपों का खंडन करते हुए भी, यहाँ तक कि यह कहते हुए कि मैं यही हूँ, मैं परमेश्वर की उपस्थिति से अवगत हूँ। मैं अपने जीवन और अपनी सेवकाई में परमेश्वर की उपस्थिति से अवगत हूँ।

आप देखिए, हमने बेईमानी की छिपी हुई बातों को त्याग दिया है, चालाकी से काम करना। फिर से, हम किस बारे में बात कर रहे हैं? हम सेवकाई में ईमानदारी के बारे में बात कर रहे हैं। वास्तव में, यदि आप दूसरे कुरिन्थियों को देखना चाहते हैं, तो आप इसे ईमानदारी के संदर्भ में देखते हैं।

मेरा मतलब है, कदम दर कदम, हर अध्याय। जब पॉल अपने विरोधियों के तर्कों का खंडन करता है, तो वह अपनी ईमानदारी के बारे में बात कर रहा होता है। उसके पास सिर्फ़ यही एक चीज़ है।

पौलुस के पास अपने विरोधियों के खिलाफ़ खुद का बचाव करने के लिए सिर्फ़ एक ही चीज़ थी, वह थी उसकी ईमानदारी। फिर वह कहता है, हम चालाकी से काम नहीं करते या परमेश्वर के

वचन को धोखे से नहीं इस्तेमाल करते, बल्कि सच्चाई को ज़ाहिर करके करते हैं। अब यहाँ चालाकी से काम करते हुए देखिए।

दुर्भाग्य से, 24वीं सदी में, हम मंत्रालय में बहुत अधिक चालाकी देखते हैं, और वे परमेश्वर के वचन को धोखे से संभाल रहे हैं, और अधिकांश समय वित्तीय लाभ के उद्देश्य से। लेकिन पॉल कहते हैं, यदि हमारा सुसमाचार छिपा हुआ है, तो यह उन लोगों के लिए छिपा हुआ है जो इस दुनिया के परमेश्वर में खो गए हैं, जिन्होंने विश्वास नहीं किया, ताकि मसीह के गौरवशाली सुसमाचार का प्रकाश, जो परमेश्वर की छवि है, उन पर न चमके। पॉल का सुसमाचार, जैसा कि कुछ लोगों ने दावा किया, केवल आध्यात्मिक रूप से दिमाग वाले अभिजात वर्ग के लिए बनाया गया था।

यही तो कोरिंथियन लोग तर्क दे रहे थे। उसने जो कहा वह अस्पष्ट था। कोई भी उसे समझ नहीं पाया।

ठीक वैसे ही जैसे उसने जो किया वह छलपूर्ण था। तर्क के लिए, पॉल स्वीकार करता है, ओह हाँ, ठीक है, चलो तर्क के लिए सहमत हैं, आप सही हैं। भले ही उसका सुसमाचार पर्दा हो, जैसा कि आप कह रहे हैं, तो यह मेरे अपने काम से पर्दा नहीं है।

यह इसलिए परदा पड़ा है क्योंकि इस दुनिया के परमेश्वर ने उनके चेहरे को अंधा कर दिया है। आप देखिए, यह परदा, जहाँ मौजूद है, पॉल की वजह से नहीं है। बिल्कुल नहीं।

जहाँ यह मौजूद है, यह उन लोगों के अविश्वास से आता है जो नाश हो रहे हैं, जिनके दिमाग वर्तमान युग के परमेश्वर द्वारा अंधे कर दिए गए हैं, जो उन्हें सुसमाचार की रोशनी को देखने से रोकना चाहते हैं जो मसीह की महिमा पर केंद्रित है। और आप समझते हैं, जब पौलुस इस युग के परमेश्वर के बारे में बात करता है, तो वह परमेश्वर पिता की बात नहीं कर रहा है, बल्कि शैतान की बात कर रहा है, जिसे इस दुनिया का राजकुमार माना जाता है। यूहन्ना अध्याय 12, श्लोक 31 में, यीशु ने कहा कि इस दुनिया का राजकुमार आ रहा है, और उसका मुझमें कुछ भी नहीं है।

उसे इस युग का भगवान कहा जाता है। वह एक हड़पनेवाला है। आप जानते हैं, हम गीत गाते हैं, वह गीत, यह मेरे पिता की दुनिया है।

बिल्कुल, यह मेरे पिता की ईसाई दुनिया है, लेकिन फिर दुश्मन, जैसा कि आपने रोते हुए कहा, खाया और इस युग का भगवान है। जिसे इस युग ने अपना भगवान बना लिया है। एक नास्तिक किसी से बात कर रहा था, और उसने कहा, मैं अपना खुद का भगवान हूँ।

मैं भगवान में विश्वास नहीं करता। मैं खुद अपना भगवान हूँ। ठीक है।

और ईसाई ने पूछा, क्या तुम्हारा ईश्वर तुम्हें खुशी देता है? वह इसका उत्तर नहीं दे सका। वह अपना ईश्वर है, लेकिन उसे कोई खुशी नहीं है। वह कहता है, कोई ईश्वर नहीं, इस युग का ईश्वर।

और आप इस युग के परमेश्वर और शैतान को जानते हैं। मेरा मतलब है, अगर पॉल में द्वैतवाद पाया जाता है, तो यह एक नैतिक और लौकिक द्वैतवाद है। वह इस युग का परमेश्वर है। वह भौतिक या आध्यात्मिक नहीं है।

शैतान आने वाले युग का परमेश्वर नहीं है। वह सिर्फ़ इस युग का परमेश्वर है और एक हड़पनेवाला है। और उसने कहा कि उसने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं।

और कभी-कभी आज, एक मंत्री के रूप में, आप वह सब करते हैं जो आप कर सकते हैं: आप उपदेश देते हैं, आप प्रार्थना करते हैं, आप उपवास करते हैं, आप अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं, और आपको परिणाम नहीं मिलते हैं। आप कहते हैं, भगवान, क्या हो रहा है? खैर, आप जानते हैं कि यह युद्ध है जैसा कि हमने शुरुआत में कहा था। ऐसा नहीं है कि वह हमें युद्ध के लिए बुलाता है, बल्कि, हम इसका सामना कर रहे हैं।

इस युग के परमेश्वर ने उनके चेहरे को अंधा कर दिया है ताकि वे सुसमाचार पर विश्वास न करें, ताकि महिमामय सुसमाचार का प्रकाश, जो परमेश्वर की छवि है, उन पर न चमके। जब पौलुस मसीह को परमेश्वर की छवि कहता है, तो बेशक, वह बात करता है। वह कहता है कि मसीह परमेश्वर की छवि है। वह जोर देकर कह रहा है कि मसीह अदृश्य परमेश्वर का दृश्यमान और पूर्ण प्रतिनिधित्व है।

यह लगभग इब्रानियों अध्याय 1, श्लोक 1 और 2 जैसा लगता है, जो अदृश्य परमेश्वर की सटीक अभिव्यक्ति है। थॉमस ने कहा, हमें पिता को दिखाओ। यीशु ने कहा, क्या तुमने मुझे देखा है, और पिता को नहीं देखा है? यदि तुमने मुझे देखा है, तो हम खुद से पूछते हैं, ओह मैं चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर को देख सकूँ।

परमेश्वर कैसा है? यीशु मसीह को देखो। परमेश्वर का प्रेम कैसा दिखता है? यीशु मसीह को देखो। परमेश्वर की शक्ति कैसी दिखती है? यीशु मसीह को देखो।

यह अदृश्य ईश्वर की सटीक अभिव्यक्ति है। वह कहते हैं कि यह ईश्वर की छवि है। आप प्रतीकों और छवियों के बारे में बात करते हैं, जो व्यक्तित्व और विशिष्टता दोनों को दर्शाते हैं।

व्यक्तित्व और विशिष्टता। तो, आप पौलुस को सुसमाचार के बारे में बात करते हुए देखते हैं। और फिर वह अब पद 5 में कहता है, क्योंकि हम अपने आप को नहीं, बल्कि मसीह यीशु को प्रभु बताते हैं, और अपने आप को यीशु के कारण तुम्हारे सेवक बताते हैं।

हम प्रचार करते हैं, खुद नहीं। इसलिए, हालाँकि पौलुस को हर व्यक्ति के विवेक के सामने खुद की प्रशंसा करने के लिए मजबूर होना पड़ा, उसने कभी खुद का प्रचार या प्रचार नहीं किया। सुसमाचार का सार प्रभु यीशु मसीह की घोषणा है।

आप देखिए, हम एक मीडिया-उन्मुख समाज में रहते हैं, जहाँ उपदेशक पर शिष्य का उपयोग करके अपनी वाक्पटुता या वक्तृत्व कौशल दिखाने और निश्चित रूप से, कुछ जिम्नास्टिक दिखाने का दबाव होता है। मनोरंजन की अपनी भूख और मनोरंजन की इच्छा में, मण्डली उस दबाव को

और बढ़ा देती है। इसलिए, उपदेशक को यह प्रदर्शित करना होता है कि वह वाक्पटु है और वह भाषण दे सकता है।

मेरा मतलब है, वक्तृत्व कौशल महत्वपूर्ण है, और वाक्पटुता महत्वपूर्ण है। आप जानते हैं, कभी-कभी लोग सार की परवाह नहीं करते हैं। वे सार की परवाह नहीं करते हैं; वे वाक्पटुता की परवाह करते हैं।

और पॉल कहते हैं, नहीं, मैं आपके पास शब्दों की बुद्धि लेकर नहीं आया हूँ। हम प्रचार करते हैं, खुद नहीं। कभी-कभी आप 30 मिनट, एक घंटे तक कोई संदेश सुनते हैं, फिर आप खुद से पूछते हैं, उसने वास्तव में क्या कहा? उसने वास्तव में क्या कहा? आप कुछ भी समझ नहीं पाते, क्योंकि संदेश सिर्फ आत्म-प्रचार के बारे में है।

मुझे याद है कि कई साल पहले, मुझे एक जगह आमंत्रित किया गया था, और मैं वहाँ एक चर्च में गया, और पादरी ने उपदेश देना शुरू किया, और उसने कहना शुरू किया, कल रात प्रभु ने मुझे बताया, और उस दिन कोई ऐसा व्यक्ति था जो पिछले दिन भगवान ने उससे कहा था, और मैं बाद में सेवा के बाद उसके पास गया, मैंने कहा, अरे भाई, फलां व्यक्ति, मैं वास्तव में आपकी सराहना करता हूँ, और मैं आपकी गवाही साझा करने के लिए भगवान को धन्यवाद देता हूँ, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि क्या यह आपके लिए था, और मण्डली को कुछ और सुनना चाहिए था। उसने मुझे कभी वापस नहीं बुलाया। यह ठीक है।

आज हम इसी की चाहत कर रहे हैं। समाज भी इसी की तलाश में है, लेकिन हम 2 कुरिन्थियों को पढ़ रहे हैं। इसमें लिखा है, क्योंकि हम अपने बारे में नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह के बारे में प्रचार करते हैं।

हम प्रचार करते हैं, खुद नहीं। मेरा मतलब है, आप प्रचारकों को सुनते हैं, यह इस बारे में है कि मैंने यहाँ क्या किया, मैंने यहाँ क्या किया, जब मैं वहाँ गया, जब मैं यहाँ आया, और उन्होंने एक ही उपदेश में 400 बार मेरा, मेरा, और केवल एक बार यीशु का उल्लेख किया। पॉल हमें अपने संदेशों की फिर से जाँच करने, अपने उपदेशों की फिर से जाँच करने, फिर से जाँच करने के लिए कहते हैं, आप जानते हैं, हम जिस शब्द का प्रचार करते हैं।

उन्होंने कहा कि हम खुद का प्रचार नहीं करते, बल्कि प्रभु यीशु मसीह का प्रचार करते हैं। यह मुझे एक कहानी की याद दिलाता है जिसे मैंने कई साल पहले एक उपदेशक को कहते हुए सुना था कि कुछ लोगों ने अपने चर्च के सामने इसे अपने बिलबोर्ड के रूप में रखा था, क्योंकि हम खुद का प्रचार नहीं करते, बल्कि प्रभु यीशु मसीह का प्रचार करते हैं, और किसी समय, मण्डली के कुछ लोग बहुत खुश नहीं थे। उन्हें लगा कि यह बहुत पुराना है, यह बहुत लंबा है, और इसी तरह की अन्य बातें, और इसलिए उन्होंने कहा, अच्छा, हम इसे छोटा क्यों नहीं बनाते? इसलिए, उन्होंने इसे छोटा करने का फैसला किया।

तो, यह हो गया, हम खुद का प्रचार नहीं करते, बल्कि मसीह यीशु का। अब तक तो सब ठीक है। और फिर, इसके बाद, कुछ समय बाद, वे वापस आए और कहा, नहीं, यह अभी भी लंबा है।

क्या हम इसे थोड़ा बदल सकते हैं? इसलिए, उन्होंने इसे थोड़ा बदल दिया, और यह बन गया, क्योंकि हम खुद का प्रचार नहीं करते, बल्कि मसीह का प्रचार करते हैं। उन्होंने हमें रोक दिया। फिर, कुछ समय बाद, वे आए और कहा, हम हर रविवार को मसीह का प्रचार नहीं करते।

हम विवाह के बारे में उपदेश देते हैं, हम इस बारे में उपदेश देते हैं, हम उस बारे में उपदेश देते हैं। लेकिन अंततः, उन्होंने कहा, चलो इसे संक्षिप्त बनाते हैं, चलो इसे आकर्षक बनाते हैं, चलो इसे ट्रेंडी बनाते हैं, चलो इसे कूल बनाते हैं। इसलिए, उन्होंने कहा, हम उपदेश देते हैं।

इसलिए, उन्होंने इसे तब तक नीचे लाया जब तक कि यह नहीं हो गया, हम प्रचार करते हैं। आज कई मण्डलियों में हम प्रचार करते हैं, यह कैसा लगता है? लेकिन क्या प्रचार करें? किसे प्रचार करें? अब इसे सुनिए। पॉल यह नहीं कहता कि हम कुछ सिद्धांतों का प्रचार करते हैं।

उन्होंने कहा कि हम अपने बारे में नहीं, बल्कि प्रभु यीशु मसीह का प्रचार करते हैं। यीशु को केंद्र में होना चाहिए। हम मसीह का प्रचार करते हैं।

सुसमाचार यीशु के बारे में है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप परलोक विद्या के बारे में बात कर रहे हैं; आप उद्धार के बारे में बात कर रहे हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यीशु सुसमाचार के केंद्र में हैं।

हम उपदेश देते हैं, खुद को नहीं। जब हम देने का उपदेश देते हैं, तब भी हमारा देना मसीह से जुड़ा होना चाहिए, जिसने हमारे लिए खुद को दे दिया और जो गरीब बन गया ताकि हम अमीर बन सकें। यही हमारे देने का केंद्र है।

इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम क्या प्रचार करते हैं; यह मसीह ही होना चाहिए जो केंद्र में हो। उन्होंने कहा, हम खुद का प्रचार नहीं करते, बल्कि हम प्रभु यीशु का प्रचार करते हैं। उन्होंने अपने प्रचार का मूल जोर, मसीह को हमारा प्रभु बताते हुए समझाया।

और फिर उसने कहा, सुनो, हम तुम्हारे गुलाम हैं। असल में, उसने जो शब्द इस्तेमाल किए हैं, वे गुलाम और डोलो हैं, सिर्फ उपदेश नहीं। हम तुम्हारे गुलाम हैं।

हम आपकी सेवा करते हैं, और यही हम करते हैं। हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि मसीह यीशु और प्रभु का प्रचार करते हैं।

सुसमाचार के वफ़ादार प्रचारकों के रूप में, पौलुस और उसके सहकर्मी खुद पर ध्यान आकर्षित नहीं करते। हालाँकि उसकी सेवकाई मूसा की तुलना में ज़्यादा शानदार थी, लेकिन इसका संबंध व्यक्तिगत महिमा से नहीं था। सुनिए, उसने कभी खुद का विज्ञापन या प्रचार नहीं किया।

कई साल पहले, मैंने एक मंत्री का पर्चा देखा था। उसमें उसका नाम लिखा था। उसने कहा था कि यह वह व्यक्ति है जिसके पीछे पूरी दुनिया भाग रही है।

दुनिया किस चीज़ के पीछे भाग रही है? मेरा मतलब है, आप पूरी दुनिया को उपदेश देते हैं। लेकिन यह दिलचस्प है; कई उपदेशक कहते हैं, ठीक है, मैं पूरी दुनिया में, दुनिया के कई देशों में उपदेश देता हूँ। नहीं, यह मुश्किल नहीं है।

अगर आप न्यूयॉर्क में किसी बहु-जातीय चर्च में जाएँ, जहाँ अफ्रीकी, कैरिबियन, भारतीय और सभी लोग हैं, और फिर एक ही जगह पर, आप पूरी दुनिया में चले गए हैं। हम अपना विज्ञापन कर रहे हैं। उन्होंने कभी अपना विज्ञापन या प्रचार नहीं किया।

उसने 2 कुरिन्थियों के अध्याय 2 में पहले ही कुरिन्थियों को बता दिया है कि वह उनके पास 1 कुरिन्थियों के साथ नहीं आया, कि वह प्रेरक शब्दों के साथ नहीं आया। इसके अलावा, उसने अपनी भूमिका को एक दास, एक सेवक के रूप में परिभाषित किया। हालाँकि वह उनकी आज्ञाकारिता का आदेश दे सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं करने का फैसला किया।

हम फिर से नम्रता के उसी विषय पर वापस आते हैं। फिर, आयत 6 में ऐसा क्यों कहा गया है? यह कहता है, क्योंकि परमेश्वर जिसने अंधकार में से ज्योति चमकने की आज्ञा दी है, वह हमारे हृदयों में चमका है, ताकि यीशु मसीह के चेहरे में परमेश्वर की महिमा के ज्ञान की ज्योति दे। लेकिन हमारे पास यह खजाना मिट्टी के बर्तनों में है, ताकि सामर्थ्य की श्रेष्ठता परमेश्वर की हो, न कि हमारी।

तो, आप आयत 5 से 7 में क्या पाते हैं? आप सार बनाम वाक्पटुता पाते हैं। पॉल ने कहा, सार है, बस वाक्पटुता है। उसने कहा, हमारे पास यह खजाना है।

क्या यह दिलचस्प है? मिट्टी के बर्तनों में खजाना। आप देखिए, अध्याय 4, श्लोक 7 से लेकर अध्याय 5, श्लोक 10 तक, आप क्रूस के उपदेश की पीड़ा और महिमा को देखने जा रहे हैं। आप देखिए, पॉल से ज़्यादा कोई भी व्यक्ति ईसाई धर्म की विरोधाभासी प्रकृति के बारे में ज़्यादा नहीं जानता था।

वह विरोधाभासी प्रकृति को जानता था। और शायद, उसके किसी भी पत्र में इतने विरोधाभास नहीं हैं जितने कि आप 2 कुरिन्थियों में पाते हैं, खासकर पद 7 से पद 12 तक। और हम इस पर गौर करने जा रहे हैं।

यह इस कथन से शुरू होता है, कि हमारे पास मिट्टी के बर्तनों में यह खजाना है, ताकि इसकी शक्ति की उत्कृष्टता ईश्वर की हो। इसे देखिए - पहला विरोधाभास।

सुसमाचार के खजाने के अवर्णनीय मूल्य और सुसमाचार के सेवकों की स्पष्ट कमज़ोरी और बेकारी के बीच का अंतर। यह एक कमज़ोरी है। बर्तन कमज़ोर है, फिर भी विषय-वस्तु शक्तिशाली है।

यह कमज़ोरी में शक्ति है। उन्होंने कहा, खजाना, हमारे पास मिट्टी के बर्तनों में यह खजाना है। और वह खजाना महान है।

उन्होंने कहा कि हमारे पास मिट्टी के बर्तनों में यह खजाना है ताकि शक्ति की उत्कृष्टता ईश्वर की हो, न कि हमारी। वह पद 6 में मिट्टी के बर्तनों के बारे में बात करता है। यह पद 6 में मिट्टी के बर्तनों में खजाने को ईश्वर की महिमा के ज्ञान से आने वाली रोशनी के रूप में संदर्भित करता है। वह बिजली जो ईश्वर की महिमा के ज्ञान से आती है।

जिन लोगों को सुसमाचार सौंपा गया है, उन्हें मिट्टी के बर्तन बताकर पौलुस मानव शरीर की निंदा नहीं कर रहा है। बिल्कुल नहीं। वह सिर्फ यह नहीं कह रहा है कि शरीर आत्मा के लिए एक पात्र है।

बिल्कुल नहीं। लेकिन वह प्रकाश के वाहकों की तुच्छता और अनाकर्षकता की तुलना स्वयं प्रकाश की सुंदरता से कर रहा है। आप देखिए, इसे देखिए।

आपके पास आपकी छाया है। आपके पास आपकी छाया है, और दीपक अंदर है। और आपके अंदर यह सुंदर प्रकाश है।

पॉल कह रहा है कि इस उद्देश्य के पीछे, इस विरोधाभास के पीछे, एक दिव्य उद्देश्य है जिसे लोग पहचान सकते हैं, और यह कि यह सर्वोत्कृष्ट शक्ति केवल ईश्वर की है। क्योंकि पॉल और उसके साथी कार्यकर्ता पीड़ित थे, वे कष्टों से गुजर रहे थे, वे कमजोर थे, और फिर भी ईश्वर का वचन जो उनसे निकल रहा था वह शक्तिशाली और जीवन-परिवर्तनकारी था। यह मुझे एक उपदेशक की कहानी की याद दिलाता है जो खुद अंधा था।

और फिर भी परमेश्वर उसका इस्तेमाल करेगा और हम जैसे अंधे हैं वैसे ही देखेंगे। अब, मैं इस उपदेशक के साथ उसी शहर में रहता था, इसलिए वह कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे मैं जानता हूँ। परमेश्वर उसका इस्तेमाल करेगा, चमत्कार होंगे, और उसकी सभा में हज़ारों लोग शामिल होंगे। आप इस आदमी को देखिए, लंगड़ा चल सकेगा, अंधा देख सकेगा, लेकिन वह खुद अंधा था।

यह एक विरोधाभास है। एक अंधा आदमी उपदेश दे रहा है, और अंधों की आँखें खोली जा रही हैं। कहानी में बताया गया कि यह आदमी, किसी समय रेडियो पर उसका साक्षात्कार करना चाहता था, और वे उसका साक्षात्कार करना चाहते थे।

और एक समय ऐसा आया जब साक्षात्कारकर्ता ने कहा, सर, क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूँ? मुझे उम्मीद है कि आप बुरा नहीं मानेंगे। और बूढ़े व्यक्ति ने कहा, ठीक है, मैं शायद वह सवाल जानता हूँ जो आप मुझसे पूछने जा रहे हैं। तो, रिपोर्टर चौंक गया, और शायद मैं वह सवाल जानता हूँ जो आप मुझसे पूछना चाहते हैं।

आप शायद मुझसे पूछना चाहते हैं कि क्या ये चीज़ें हो रही हैं, क्या ये चमत्कार हो रहे हैं, क्या अंधे की आँखें दिखाई दे रही हैं, और क्या लंगड़े चल रहे हैं। आप शायद पूछना चाहते हैं, मैं खुद अंधा क्यों हूँ? उसने कहा कि यह आपको यह बताने के लिए है कि शक्ति मेरी नहीं है; यह भगवान की है। इसका मतलब है कि आपको यह बताना कि मैं चमत्कार नहीं कर रहा हूँ, बल्कि भगवान मेरे माध्यम से चल रहे हैं। क्योंकि हमारे पास यह खजाना मिट्टी के बर्तनों में है, ताकि उत्कृष्टता और शक्ति भगवान की हो।

यद्यपि वह भाई अंधा था, फिर भी वह मिट्टी का बर्तन था, परन्तु सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य उसके द्वारा प्रकट हो रही थी। क्यों? ताकि महिमा केवल परमेश्वर की हो। एक अंधा आदमी प्रचार कर रहा था, और अंधा देख रहा था, और लंगड़ा चल रहा था, और वह अंधा ही मर गया।

इसलिए, उन्होंने कहा, इससे आपको पता चलेगा कि मैं ऐसा करने वाला नहीं हूँ, कि शक्ति मेरी नहीं है, और इसलिए महिमा मेरी हो सकती है। शक्ति परमेश्वर की है। यह सुसमाचार की शक्ति है कि शक्ति की उत्कृष्टता परमेश्वर की हो सकती है, हमारी नहीं।

फिर, पद 8 और 9 में, आप देखते हैं कि पौलुस पद 8 और 9 में हमारे लिए विरोधाभास का वर्णन करता है, और आप देखते हैं कि उसने वहाँ क्या कहा, अब 2 कुरिन्थियों, अध्याय 4 से पद 8 से शुरू होता है। हम हर तरफ से परेशान हैं, फिर भी व्यथित नहीं हैं। हम उलझन में हैं, लेकिन निराश नहीं हैं। सताए गए हैं, लेकिन त्यागे नहीं गए हैं।

गिराया तो जाता है, परन्तु नाश नहीं किया जाता। प्रभु यीशु की मृत्यु को हमेशा शरीर में धारण करते हुए, यीशु का जीवन हमारे शरीर में प्रकट हो सकता है। क्योंकि हम जो जीवित हैं, हमेशा मृत्यु के हवाले किए जाते हैं, क्योंकि यीशु बीमार है, ताकि यीशु का जीवन भी हमारे नश्वर शरीर में प्रकट हो सके।

तो, फिर मृत्यु हम में चलती है, और जीवन तुम में। आप देखिए, शेष भाग में, 4 से शुरू होकर, यह 4 कहता है, श्लोक 6 से, फिर 7, श्लोक 7 से अध्याय 5, श्लोक 10 तक, वह अपने अध्ययन, अपने शरीर और अपने कष्टों की तुलना स्वर्गीय शरीरों से करता है जो विश्वासियों को पुनरुत्थान पर प्राप्त होंगे। पुराने नियम में, छवि मनुष्यों की नाजुकता को दिखाने के लिए काम करती थी।

जब हम मिट्टी के बर्तनों के बारे में बात करते हैं, तो मेरा मतलब है कि आप यिर्मयाह अध्याय 22, श्लोक 28, और भजन 30, श्लोक 13 पढ़ें। विशेष रूप से, मिट्टी के बर्तनों या बर्तनों की छवि का उपयोग इस्राएल के पापों के लिए दंड के रूप में पीड़ा के संदर्भ में किया जाता है। पॉल के लिए, यह पीड़ा प्रेरितिक सेवा की पीड़ा है।

इस आयत में विरोधाभास का बिंदु संदेश के अमूल्य मूल्य और संदेशवाहक की पीड़ा के बीच विरोधाभास है। पॉल के कथन के पीछे उसके विरोधियों द्वारा किए गए हमले का संकेत है, जो बहुत कमजोर हैं, और वह यह दिखाने में विफल रहता है कि उसके पास दिव्य शक्ति है। पॉल कहता है, आपने गलत समझा।

पॉल के लिए, ईश्वरीय शक्ति केवल ईश्वर की संपत्ति है, और विरोधाभासी रूप से, यह उसके कष्टों में मौजूद है जब वह एक प्रेरित के रूप में प्रचार करता है। पॉल यह दिखाने में रुचि रखता है कि उसकी शारीरिक कमजोरी और पीड़ाएँ प्रेरितिक आदेश का सबूत या कमी नहीं हैं, बल्कि, वे उसके प्रेरित होने को प्रकट करते हैं। प्रेरित होना जो एक पीड़ित प्रभु से प्राप्त होता है और जिसका अंतिम उद्देश्य, ईश्वर की महिमा है।

इसलिए, अपनी बात को और आगे बढ़ाने के लिए, पौलुस कठिनाइयों की सूची से शुरू करता है, जिसे हम पद 8 से शुरू होते हुए देखते हैं। आपके पास चार स्पष्ट विरोधाभास हैं। पद 8 को देखें। हम हर तरफ से परेशान हैं, फिर भी व्यथित नहीं हैं। हम उलझन में हैं, लेकिन निराश नहीं हैं।

सताया गया, लेकिन त्यागा नहीं गया। गिराया गया, लेकिन नाश नहीं हुआ। आप इसे आयत 8 और 9 में देख सकते हैं। पौलुस अपनी कमजोरी के बारे में बात करता है और एक उदाहरण का उपयोग करता है।

आप देखिए, यहाँ आपको जो भी रूपक मिलेगा, वह किसी सैन्य युद्ध या ग्लैडीएटर युद्ध को दर्शाता है। इसे फिर से देखें। हर तरफ़ से परेशान, फिर भी परेशान नहीं।

उलझन में हूँ, लेकिन निराश नहीं हूँ। सताया हुआ हूँ, लेकिन त्यागा हुआ नहीं हूँ। गिरा हुआ हूँ, लेकिन नष्ट नहीं हुआ हूँ।

वास्तव में, आपको बस ग्रीक में उन शब्दों पर एक नज़र डालनी है, और मैं उन्हें थोड़ी देर में समझाऊंगा। यह सिर्फ़ बात करता है, हम मुश्किल में हैं। प्रत्येक रूपक सैन्य रूपक के बारे में बात करता है कि चीजें कितनी कठिन हैं।

वह हर तरफ से दबाव में था। उसने कहा, लेकिन मैं घिरा हुआ नहीं हूँ। मैं मुश्किल में हूँ, लेकिन मैं घिरा हुआ नहीं हूँ।

मैं बिना किसी हलचल के नहीं रह सकता। मैं आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य नहीं हूँ। न्यू इंग्लिश बाइबल कहती है, कभी भी अपनी बुद्धि का अंत मत करो।

हैरान, लेकिन कभी भी बुद्धि का अंत नहीं। मेरा मतलब है, कभी नुकसान में नहीं, लेकिन कभी भी पूरी तरह से नुकसान में नहीं, लेकिन कभी भी पूरी तरह से नुकसान में नहीं। तो, वहाँ जो है उस पर एक नाटक है।

शत्रु ने उसे सताया, लेकिन शत्रु की दया पर नहीं छोड़ा। उसे सताया गया, लेकिन उसने कहा, सुनो, वह जमीन पर जाना जाता है, लेकिन स्थायी रूप से जमीन पर नहीं गिरा। और यह मुझे प्रेरितों के कार्य की याद दिलाता है, और पॉल प्रचार कर रहा था, और उन्हें उसे एक टोकरी में रखना था, और उसे दूसरी तरफ रखना था, और एक विशेष स्थान पर, वह लेटा हुआ था, और उन्होंने मान लिया कि वह मर चुका है, और मुझे यकीन है कि छोटे बच्चों की तरह, शायद, यह सिर्फ़ एक अनुमान है, पॉल यह देखने की कोशिश कर रहा था कि वे आसपास हैं या नहीं, और अपनी आँखें थोड़ी सी खोली, एक कोना खोला जब तक कि वे चले नहीं गए, और वहाँ वह कहता है, वह फिर से खड़ा हो गया, और वह चला गया था।

गिरा दिया गया लेकिन स्थायी रूप से जमीन पर नहीं टिका। और फिर, पद 10 और 11, हमेशा शरीर में प्रभु यीशु की मृत्यु को लेकर चलते हैं, ताकि यीशु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रकट हो सके। आप देखिए, पद 10 उन विरोधाभासों का सारांश देता है जिन्हें हम देखते हैं, उन

विरोधाभासों का जिन्हें हम 8 और 9 में देखते हैं। हम हमेशा मर रहे हैं, फिर भी हम बेजान नहीं हैं।

हमेशा मरते रहते हैं, लेकिन हम बेजान नहीं हैं। उसने कहा, अपने शरीर में प्रभु यीशु की मृत्यु को धारण करते हुए, ताकि यीशु का जीवन भी हमारे शरीर में प्रकट हो सके। इस प्रकार, पौलुस ने परमेश्वर की सेवा के दौरान कठिनाई, उलझन, सताए जाने और मारे जाने के अनुभव का सारांश दिया।

दूसरी ओर, वह यीशु के जीवन के बारे में बात करता है ताकि प्रभु द्वारा उसे कुचले जाने, निराशा, त्याग और विनाश से बचाया जा सके, जो सभी मसीहियों के नश्वरता से अंतिम उद्धार को दर्शाते हैं जब हम पुनरुत्थान पर उठते हैं। दुख के बीच में सांत्वना। लेकिन, यीशु के मरने के वाक्यांश का अर्थ भी श्लोक 11 द्वारा समझाया गया है।

क्योंकि हम जो जीवित हैं, हमेशा यीशु की खातिर मृत्यु के हवाले किए जाते हैं। उसने खतरनाक खतरों का सामना किया ताकि यीशु का जीवन हमारे नश्वर शरीर में भी प्रकट हो सके। ये दो आयतें शक्तिशाली, शक्तिशाली, शक्तिशाली हैं।

ये दोनों आयतें यीशु के जीवन की मृत्यु को प्रेरित के अनुभव में एक साथ स्पष्ट रूप से परिभाषित करती हैं। यह मृत्यु के बाद जीवन या मृत्यु के माध्यम से जीवन का मामला नहीं था, बल्कि मृत्यु के बीच में जीवन का मामला था। पॉल कहते हैं, मृत्यु के बीच में, यही जीवन है।

मृत्यु से बार-बार छुटकारा पाना पुनरुत्थान की शक्ति का सबूत है। याद रखें, अध्याय 1 में पहले से ही जीवन के प्रति उसकी निराशा के बारे में बात की गई है और परमेश्वर के बारे में बात की गई है जिसने हमें बचाया, जिस पर हम भरोसा करते हैं कि वह हमें बचाएगा, और वह हमें भविष्य में भी बचाएगा। तो, आप खुद से पूछें, पौलुस को क्या प्रेरित करता है? इस आदमी को क्या प्रेरित करता है? क्योंकि वह जानता है कि उसके पास क्या है, पद 12 में एक साहसिक प्रहार के साथ।

वह कहते हैं, इसलिए मृत्यु हम में काम करती है, लेकिन जीवन तुम में। यहाँ आपको फिर से जीवन और मृत्यु का विषय मिलता है। आप देखिए, हमने अभी जो देखा है, उसे हम कठिनाइयों की सूची कहते हैं।

पद 11 पिछले पद को स्पष्ट करता है, अपने विचारों को थोड़ी अलग भाषा में दोहराता है। अब, पौलुस को यीशु के कारण मृत्यु के लिए सौंप दिया गया, जो उसके विश्वास और यीशु में पाए जाने वाले अस्तित्व के पैटर्न के अनुरूप खुद को ढालने की इच्छा को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, आपका मन जल्दी से फिलिप्पियों अध्याय 3 की ओर दौड़ता है, जहाँ वह कहता है कि मैं उसे और उसके पुनरुत्थान की शक्ति और उसके दुखों की संगति को जान सकता हूँ, उसके पुनरुत्थान, उसकी मृत्यु, उसके जीवन, हर चीज़ के अनुरूप बन सकता हूँ।

उसे अनुरूप बनाया जा रहा था ताकि मैं उसे और उसके पुनरुत्थान की शक्ति को जान सकूँ। लेकिन आज जब हम उस अंश को पढ़ते हैं तो हम यहीं रुक जाते हैं। उसके दुखों की संगति के बारे में क्या? उसकी मृत्यु के अनुरूप? यहाँ सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है।

आज के कई ईसाइयों की तरह कोरिंथियन, और खास तौर पर पेंटेकोस्टल, और मैं उनमें से एक हूँ, का मानना था कि दुख और विपत्तियाँ आत्मा से भरे जीवन के साथ असंगत थीं। अब, हर पेंटेकोस्टल ऐसा नहीं सोचता, लेकिन ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि, ठीक है, अगर आप भगवान के साथ सही हैं, तो कोई दुख नहीं है। यदि आप पीड़ित हैं, तो मेरा मतलब तथाकथित समृद्धि सुसमाचार से है।

अगर आप कष्ट सह रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपके साथ कुछ गड़बड़ है। अब, इसका मतलब है कि पॉल के साथ कुछ गड़बड़ जरूर रही होगी। अगर किसी ने सुसमाचार के लिए कष्ट सहा, तो पॉल ने सुसमाचार के लिए कष्ट सहा।

आज ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि दुख और विपत्ति आत्मा से भरे जीवन के साथ असंगत हैं, और आम तौर पर विजयी या सफल ईसाई जीवन के रूप में जो माना जाता है, वह तो दूर की बात है। नहीं, पौलुस इसे अलग तरह से समझता है। यह उसकी कठिनाइयाँ हैं जो उसकी सेवकाई को वैध बनाती हैं।

पॉल के दिनों में, और आज दुनिया भर के कई ईसाइयों के लिए, ईसाई का जीवन कष्टों से भरा जीवन है। वास्तव में, आज कुछ जगहों पर, ईसाई बनना मौत की सजा पाने के समान है। इसलिए, अगर कोई यह कहता है कि अगर आप कष्ट सह रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आप एक अच्छे ईसाई नहीं हैं, यह एक आत्मा से भरा जीवन नहीं है, यह बाइबल के अनुसार नहीं है, और पॉल पूरी तरह से इसके खिलाफ जाता है।

इसलिए, हमें यह समझने की जरूरत है कि मसीही जीवन का क्या मतलब है। पौलुस ने मसीह के प्रकाश में अपने दुखों को समझा। हमें हमेशा अपने दुखों को परिप्रेक्ष्य में रखने में सक्षम होना चाहिए।

मसीह के दृष्टिकोण से और अनंत काल के दृष्टिकोण से। अब, सवाल यह है कि पौलुस को अपनी सेवकाई को ईमानदारी से निभाने में किस बात ने सक्षम बनाया? आपको इसका उत्तर आयत 13 और 14 में मिलेगा। हमारे पास भी विश्वास की वही आत्मा है।

जैसा लिखा है, 'मैंने विश्वास किया और इसीलिए बोला।' हम भी विश्वास करते हैं और इसीलिए बोलते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में जिलाएगा और तुम्हारे साथ अपने सामने पेश करेगा।

किस बात ने पौलुस को प्रोत्साहित किया? किस बात ने उसे अपनी सेवकाई को ईमानदारी से साझा करने और निभाने में सक्षम बनाया? खैर, इसका उत्तर सरल है। पौलुस ने भजनकार के दृढ़ विश्वास को साझा किया कि विश्वास अपने आप में चुप नहीं रह सकता और उसका अपना ईसाई विश्वास कि मसीह का पुनरुत्थान विश्वासियों के पुनरुत्थान की गारंटी देता है। मैंने दो बातें कही हैं।

नंबर एक, उन्होंने भजनकार के दृढ़ विश्वास को साझा किया कि विश्वास चुप नहीं रह सकता है, और निश्चित रूप से, उनका यह दृढ़ विश्वास है कि मसीह का पुनरुत्थान विश्वासियों के पुनरुत्थान की गारंटी देता है क्योंकि यहाँ पौलुस भजन 116 पद 10 को उद्धृत कर रहा था। अब, हिब्रू पाठ का सटीक अर्थ निश्चित नहीं है, लेकिन अपने उद्धरण में, पौलुस सेप्टुआजेंट का ठीक उसी तरह अनुसरण करता है जहाँ वह कहता है, मैंने विश्वास किया इसलिए मैंने कहा है। हिब्रू का अनुवाद भजन की भावना के अनुरूप है, हालाँकि उसके सटीक शब्दों में नहीं।

इसलिए, पौलुस ने हिब्रू में सटीक शब्दों को उद्धृत नहीं किया, लेकिन अगर हम याद रखें कि सेप्टुआजेंट पौलुस की बाइबल थी, तो उसने सेप्टुआजेंट से उद्धरण दिया। आप देखिए, जब आप भजन संहिता में संदर्भ को देखते हैं, तो भजनकार एक गंभीर बीमारी से दिव्य मुक्ति का वर्णन करता है, और यह पूरी तरह से निराशा है, और फिर वह विचार करता है कि वह प्रभु के प्रति अपनी भक्ति को सबसे उपयुक्त तरीके से कैसे प्रस्तुत कर सकता है। यह भजन 116 है।

इसलिए, वास्तविक अर्थ में, भजनकार की धन्यवाद की अभिव्यक्ति परमेश्वर में उसके विश्वास से उत्पन्न हुई। मैंने अपने विश्वास को दृढ़ रखा; मैं दोषमुक्त हुआ; इसलिए, मैंने बोला है। पौलुस, अपने हिस्से के लिए, उस सुसमाचार के बारे में चुप नहीं रह सकता था जिस पर वह विश्वास करता था।

इसलिए वह कह सकता था कि यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न करूँ तो मुझ पर हाय। पौलुस द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने का दूसरा कारण उसका अपने व्यक्तिगत पुनरुत्थान के प्रति दृढ़ विश्वास था, जिसे सभी विश्वासियों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति या मसीह की उपस्थिति के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। वह मसीह के साथ जी उठेगा।

तो, वह पद १५, पद १६, पद १५ और १६ कहता है। चलिए १४, चलिए वापस चलते हैं और १४ पर जाते हैं। यह जानते हुए कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वह हमें भी यीशु के द्वारा जिलाएगा और हमें तुम्हारे साथ उपस्थित करेगा क्योंकि सभी चीजें तुम्हारे लिए हैं।

इसलिए, पौलुस पद 15 में बताता है कि वह क्यों बोलना जारी रखता है, और इस अंतिम कारण की ओर मुड़ता है कि उसे एक प्रेरित के रूप में क्यों कार्य करना चाहिए और खुद को उन कष्टों के लिए प्रस्तुत करना चाहिए जिनसे वह गुजरा था। उसका दुख और उसका संदेश कुरिन्थियों के लिए और अधिक कुरिन्थियों तक पहुँचने के उद्देश्य से है। पौलुस साहसपूर्वक बोलता है क्योंकि उसका विश्वास उसे बताता है कि सांसारिक क्लेश से परे पुनरुत्थान का आश्वासन निहित है।

आप जानते हैं कि विश्वासियों के रूप में हमारे पास यही आशा है, और यह आशा हमें यह जानने के लिए एक आधार प्रदान करती है कि यह सब कुछ का अंत नहीं है। पॉल का विश्वास केवल एक व्यक्तिपरक दृष्टिकोण नहीं है। यह एक ऐसा विश्वास है जो एक प्रतिबद्धता है।

इसमें एक वस्तुनिष्ठ विषयवस्तु है। इसमें यह ज्ञान शामिल है कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जीवित किया है, कि वह उसे समय के अंत में यीशु के साथ रहने के लिए जीवित करेगा, और निहित रूप से वह कुरिन्थियों को भी जीवित करेगा। इसलिए, जब पॉल मैं विश्वास करता हूँ के बारे में बात करता है तो यह केवल एक अस्पष्ट भावना नहीं है।

यह सिर्फ एक व्यक्तिपरक भावना नहीं है, अस्पष्ट है। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। यह विश्वास है जिसका एक उद्देश्य है।

जब पॉल इस शब्द का इस्तेमाल करता है तो इसका मतलब होता है प्रतिबद्धता। इसका मतलब है भरोसा। इसका मतलब सिर्फ भावना से कहीं ज्यादा है।

इसलिए, पद 15 में, पौलुस यह निष्कर्ष निकालता है कि मसीह के प्रेरित के रूप में उसका अंतिम लक्ष्य परमेश्वर को महिमा देना है। यह परमेश्वर को महिमा देना है। उसके सभी कार्यों का आधार उसका धर्म परिवर्तन था, न कि अपना कद बढ़ाने की उसकी इच्छा।

उसका उद्देश्य यह है कि सुसमाचार के प्रचार के साथ परमेश्वर का अनुग्रह अधिक लोगों तक फैल सके। इसलिए, पौलुस पद 16 में फिर से दोहराता है कि हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

जो बात उन्होंने पद 1 में पहले ही कह दी थी, वही पद 16 में भी दोहराई गई है। इसलिए, वे पिछले खंडों का सारांश देते हैं और फिर पद 1 के विषय को उठाते हैं। फिर वे बाहरी और आंतरिक व्यक्ति के बीच अंतर बताते हैं। बाहरी व्यक्ति एक संपूर्ण व्यक्ति है जैसा कि दूसरे लोग देखते हैं या किसी व्यक्ति की मानवता का वह पहलू जो विभिन्न हमलों और कठिनाइयों के अधीन है, जिन्हें उन्होंने सूचीबद्ध किया है।

आंतरिक व्यक्ति अदृश्य व्यक्तित्व है जो केवल परमेश्वर और स्वयं को ही ज्ञात है। कुरिन्थियों को यह समझने की आवश्यकता है कि पौलुस की शारीरिक कमजोरी के बावजूद, उसका आंतरिक व्यक्ति प्रतिदिन रूपान्तरित हो रहा है। फिर वह वर्तमान और मसीह की वापसी के बीच के अंतर की ओर मुड़ता है।

यह जीवन और आने वाला जीवन। पौलुस के विरोधियों के लिए, वर्तमान समय महिमा का समय है, लेकिन पौलुस के लिए, यह दुख का समय है। इसलिए, पद 16 से 18 तक पौलुस दुख के माध्यम से महिमा के बारे में बात करते हुए अध्याय को आगे बढ़ाता है।

इसलिए, श्लोक 16 में हम हिम्मत नहीं हारते। इसने धीरे-धीरे दर्द सहा। यह हिम्मत क्यों नहीं हारता? आप इसे श्लोक 17 और 18 में देख सकते हैं।

17 और 18 से, क्योंकि पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता है। पद 16, जिसके कारण हम हिम्मत नहीं हारते, हम हिम्मत नहीं हारते, परन्तु यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश होता है, परन्तु भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन उद्धार पाता है। आप जानते हैं, जब मैं पद 17 पढ़ता हूँ, तो मैं इसे समझ नहीं पाता।

जब वह कहता है कि हमारा हल्का क्लेश। पाँच बार पीटा गया, हल्का क्लेश। जेल में डाला गया, हल्का क्लेश।

छड़ियों से पीटा जाना, हल्का कष्ट। मेरा मतलब है कि आपको बस उन कठिनाइयों की सूची देखनी होगी जिनसे पॉल गुजरा। मेरा मतलब है कि अध्याय एक में आप देखते हैं कि पिटाई पीड़ा है, और पॉल ने कहा कि यह सब एक साथ रखें जो आप 1 कुरिन्थियों में पढ़ते हैं जो आप 2 कुरिन्थियों में पढ़ते हैं, वह सब जो वह संक्षेप में बताता है, और वह इसे हल्का कष्ट कहता है।

अब, अगर यह बहुत बड़ा क्लेश है तो क्या होगा? यह क्या होगा? मुझे नहीं पता। लेकिन वह हल्का क्लेश कहता है। अब, भाई और बहन, हौसला रखिए।

मैं चाहता हूँ कि आप प्रोत्साहित हों। पौलुस जो कहता है उसे सुनें और फिर से सुनें। उसने कहा कि हल्का क्लेश, लेकिन एक पल के लिए।

तुम्हें पता है, कभी-कभी तुम्हें लगता है कि एक पल एक दिन है। नहीं, यह एक दिन नहीं है। वह इसे एक पल कहता है।

मेरा मतलब है, इसके बारे में सोचिए: जब पॉल फिलिप्पियों को लिख रहा था, तब तक उसके धर्म परिवर्तन के लगभग 30 साल हो चुके थे, और वह पहले दिन से ही इस पीड़ा को झेल रहा था। इसलिए जब तक वह कुरिन्थियों को लिख रहा था, तब तक आप जानते हैं कि इतने साल बीत चुके थे, और वह सब कुछ, सभी पीड़ाओं को एक साथ समेटता है। उसने एक पल के लिए कहा।

एक पल का मतलब है 30 साल या उससे ज़्यादा। वाह। उन्होंने कहा कि हमारा हल्का-फुल्का दुख सिर्फ़ एक पल के लिए है।

इससे हमें मदद मिलती है। मेरा मतलब है, भाई, बहन, आप यह देख रहे हैं, आप यह सुन रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि आपका दुख भारी है। हाँ, मुझे पता है कि यह आपके लिए भारी है, लेकिन आगे जो होने वाला है, उसकी तुलना में यह सिर्फ़ एक पल के लिए है। उन्होंने कहा कि काम करना हमारे लिए एक शाश्वत भार से भी बढ़कर है।

क्या आप देख सकते हैं कि एक हल्का है और दूसरा भारी है? हल्का दुःख भारी महिमा अनन्त भार। एक क्षणिक है, जबकि दूसरा शाश्वत है।

दुःख हल्का है, और महिमा भारी है। दुःख क्षण भर का है, और महिमा अनन्त है। वाह।

श्रेष्ठ उपहार। वर्तमान में, वर्तमान क्षणिक पीड़ा के बाद अनंत महिमा आएगी। इसलिए, पौलुस हमें दिखाता है कि वह क्यों हिम्मत नहीं हारता।

वह गंभीरता से नहीं देखता। अब सुनिए, वह हिम्मत क्यों नहीं हारता? नंबर एक है एक नए और श्रेष्ठ वाचा के मंत्री के रूप में दिव्य आदेश। वह जानता था कि उसे किसने बुलाया है।

दूसरा, मृतकों में से मसीह के विजयी पुनरुत्थान को साझा करने की संभावना है। और तीसरा, कुरिन्थियों तक पहुँचने और उनके आध्यात्मिक कल्याण और परमेश्वर की महिमा को बढ़ावा देने का तत्काल कार्य है। इसलिए, इन तीन कारणों से, हम देख सकते हैं कि वह हिम्मत नहीं हारता।

अब उसने हमें वे कारण बताए हैं। नए करार के सेवक के रूप में उसका काम। मृतकों में से मसीह के विजयी पुनरुत्थान की संभावना, जो उसे साझा करती है।

और तीसरा काम है कुरिन्थियों को मजबूत बनाना। लेकिन पौलुस ने वास्तविकता से इनकार नहीं किया। और हमें भी वास्तविकता से इनकार नहीं करना चाहिए।

यह पहचानना काफी यथार्थवादी था कि मेहनत और दर्द शारीरिक रूप से उस पर हावी हो रहे थे। तो हाँ, शानदार मुआवज़ा था लेकिन वह जानता है कि बाहरी व्यक्ति नष्ट हो गया है। यह ऐसा है जैसे कह रहा हो हाँ, मुझे पता है कि यह शारीरिक रूप से कमज़ोर था।

वह यह जानता है। फिर, श्लोक 17 दैनिक आध्यात्मिक नवीनीकरण की एक आश्चर्यजनक परिभाषा है। ठोस, स्थायी महिमा का निरंतर उत्पादन किसी भी प्रकाश समस्या से कहीं अधिक है।

यह दिलचस्प है कि पौलुस महिमा के बारे में ऐसे बात करता है जैसे कि यह एक ठोस चीज़ हो जिसे धीरे-धीरे जोड़ा जा सकता है। इसी तरह, वह कुलुस्सियों 1:5 में कहता है कि हमारी विरासत स्वर्ग में रखी गई है। लेकिन सुनिए, जब आयत 18 की बात आती है, तो पौलुस हमें कुछ ऐसा दिखाता है जो महिमा किसी भी तरह से स्वतः नहीं आती।

हम उन चीज़ों को नहीं देखते जो दिखाई देती हैं, बल्कि उन चीज़ों को देखते हैं जो दिखाई नहीं देतीं। जो चीज़ें दिखाई देती हैं वे अस्थायी हैं, लेकिन जो चीज़ें दिखाई नहीं देतीं वे शाश्वत हैं। उस आयत में, पौलुस हमें समझाता है कि यह महिमा अपने आप नहीं आती।

यह तभी संभव है जब हम अपना ध्यान उस पर केन्द्रित रखें जो अदृश्य है। उस पीड़ा ने हमें महिमा की ओर अग्रसर किया। जो दिखाई देता है और जो अदृश्य है।

यह पॉल में पहले से मौजूद और अभी तक नहीं के बीच का तनाव है। जो अब नश्वरों द्वारा देखा जा सकता है और जो अभी तक नश्वर नज़र से छिपा हुआ है, उसके बीच का अंतर। यही बात पॉल कह रहा है जो बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। उस क्षेत्र के साथ व्यस्तता जहाँ परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है। यह पॉल के मनमाने चुनाव का परिणाम नहीं था।

यह एक सूचित निर्णय था। पॉल गहराई से जानते थे कि वर्तमान युग क्षणभंगुर है, जबकि आने वाला युग शाश्वत है, जिसका अर्थ है कि यह हमेशा के लिए बना रहेगा। जैसा कि हम अध्याय 4 का समापन करते हैं, हमें गीत याद आता है कि यीशु की ओर अपना चेहरा मोड़ो, उसके अद्भुत चेहरे को पूरी तरह से देखो और पृथ्वी की चीज़ें उसकी महिमा और अनुग्रह के प्रकाश में अजीब तरह से फीकी पड़ जाएंगी।

जब आप निराश हों, जब आगे बढ़ना कठिन हो, जब सेवकाई कठिन हो, तो इन बातों को याद रखें। नंबर एक, सुसमाचार के सेवक के रूप में आपका कार्य। नंबर दो, मृतकों में से मसीह के विजयी पुनरुत्थान में भाग लेने की संभावना को याद रखें।

और तीसरा, याद रखें कि आप जिन लोगों की सेवा करते हैं उनके जीवन में आप जो खुशी लाते हैं। और फिर मत भूलिए , जैसा कि हम हमेशा कहते हैं और ऐसा हुआ कि यह हमेशा के लिए नहीं आता। इसलिए दुख का प्रकाश प्रकाश है और यह क्षण भर के लिए है।

और किसी समय, आप कह सकेंगे कि यह घटित हो चुका है। यह घटित होगा, यह घटित होगा।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5, 2 कुरिन्थियों 4, मिट्टी के बर्तनों में खजाना है।